सामूहिक अनिष्ट
मेहरानगढ दुर्ग दुःखान्तिका का ज्योतिषिय विश्लेषण

मेहरानगढ़ दुःखांतिका का सभी परिप्रेक्ष्य मे विश्लेषण किया गया जा चुका है। लेकिन इस अरिष्ट का ज्योतिषिय विश्लेषण ही सही व पूर्ण स्वरूप दिखा सकेगा।
सभी सामूहिक अनिष्ट ग्रह गोचरिय व्यवस्था के अनुरूप ही घटित होते है। चूंकि
ऋग्वेदानुसार -

" ग्रहाधीनं जगत्सर्व, ग्रहाधीनं नरावराः ।
कालज्ञानं ग्रहाधीनं, ग्रहा कर्मफल प्रदाः ।।

यह सम्पूर्ण चराचर जगत ग्रहों के अधीन हैं। प्राणी मात्र ओर नर-नारी ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित हैं। काल का ज्ञान ग्रहों के अधीन हैं अतः सभी शुभाशुभ फल काल से निर्धारित होते है। उसी काल (समय) के अनुसार इस सामूहिक अनिष्ट (मेहरानगढ़ दुःखांतिका) का विश्लेषण किया गया हैं।
यहॉ मेहरानगढ़ की सूर्य कुण्डली व जिस दिन घटना घटी उसकी गोचर कुण्डली की विवेचना कर अंतिम पड़ाव तक पहुॅचा जायेगा। सर्वप्रथम हम उन कारणों का उल्लेख करेंगे जिनके कारणवश सामूहिक अनिष्ट घटित होता हैं।

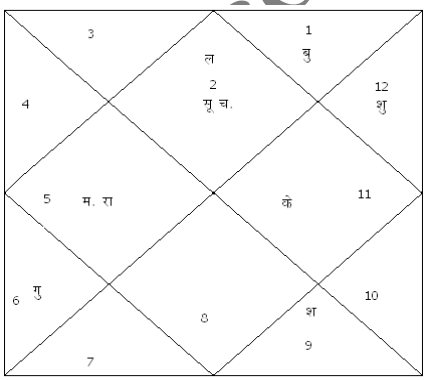

(मेहरानगढ दुर्ग की सूर्य कुण्डली

❁ मुख्य कुण्डली या उसकी वर्षफल अथवा गोचर कुण्डली में -
(1) अष्टमेश व लग्नेश मे युति सम्बन्ध हो।
(2) अष्टमेश व लग्नेश मे दृष्टि सम्बन्ध हो।
(3) अष्टमेश लग्न को देख रहा हो।
(4) अष्टमेश लग्न को घात चक्र का कोई बिन्दु उस समय घटित हो रहा हैं।
(5) गोचर कुण्डली में मोक्ष की दशा में मारकेश या अष्टमेश का अन्तर चल रहा हैं।
(6) अष्टमेश लग्नस्थ हो।
(7) पूर्णिमा व अमावस्या के दिन या उनके आस-पास

उपरोक्त बिन्दु यदि दृष्टिगोचर हैं तो सामूहिक अनिष्ट घटित होगा।
दोनो मुख्य व गोचर कुण्डली में अष्टमेश बृहस्पति हैं जो कि लग्न को देख रहा हैं तथा मुख्य कुण्डली में लग्नेश को भी देख रहा हैं अतः सामूहिक अनिष्ट घटित होगा ही। चूंकि**"भावात् भावम्"** सिद्धान्तानुसार अष्टम से अष्टम का आधिपति चन्द्रमा भी अष्टमेश का ही कार्य करेगा और मुख्य कुण्डली में अष्टमेश (चन्द्रमा) भावात् भावम् के अनुसार लग्न मे विराजित हैं तो यह सामूहिक अनिष्ट होने का द्योतक है।

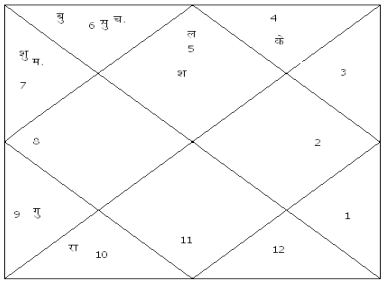

(मेहरानगढ दुर्ग की गोचर कुण्डली 30 सितम्बर 2008)

www.drjitendraastro.com

सामूहिक अनिष्ट मेहरानगढ दुर्ग दुःखान्तिका का ज्योतिषिय विश्लेषण

यहॉ दुर्ग का घात चक्र हस्त नक्षत्र के चर्तुथ चरण में स्थित हैं और उसी दिन घात होने की संभावना प्रबल होगी जिस दिन हस्त चर्तुथ होगा अतः यह स्वयं सिद्ध हैं कि गोचरिय कुण्डली के व्यवस्थानुसार 30.09.2008 को हस्त नक्षत्र व चर्तुथ चरण ही था। शास्त्रों के अनुसार यदी किसी भी कुण्डली का घात हस्त नक्षत्र में स्थित हैं, तों अनिष्ट श्वांस अवरोधन, उल्टी होना, भ्रम जाल होने से, डर की भावना सें तंत्रिका क्रांति व छोटी-छोटी श्वास लेंनें सें होगा जो कि उस दिन घटित हुआ।

इसी प्रकार 5/10/15 पूर्णा तिथियॉ भी हस्त नक्षत्र की तरह ही घात चक्र कें अर्न्तनिहित ही हैं हमे पता हैं कि घटना प्रतिपदा कों घटित हुई हैं। गोचर कुण्डली का घात चक्र शूल योग हैं तथा मुख्य कुण्डली में योग अतिगण्ड योंग हैं अतः शास्त्रानुसार सामूहिक अनिष्ट-

''तिथिक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौं।
शूलें गण्डे च पारिधे वज्रे च यमघण्टके।।
काल गण्डे मृत्युयोगे दीघयोगे सुदारूणे।
तस्मिन्गण्डदिने प्राप्ते प्रसूतियदि जायते।।''

नंदा तिथियों(1/6/11) का आदि भाग और पूर्णा तिथियों(5/10/15) का समाप्ति गडांत कहलाता हैं। पूर्णिमा की समाप्ति प्रतिपदा का आरम्भ, दशमी की समाप्ति एकादशी का प्रारम्भ, पंचमी की समाप्ति व षष्ठी तिथि का आरम्भ तिथि गडांत कहलाता हैं। इस क्षण जातक कुण्डली (गोचर कुण्डली) मे ग्रह व्यवस्था मृत्युकारक होती हैं ओर ऐसे ही व्यतिपात, व्याघात, विष्टि व अतिगंड योग में जन्में या घातचक्र में होने से नवजात कुण्डली (गोचर कुण्डली) मे अनिष्ट द्योतक होता हैं। यहॉ यह ज्ञात होता है कि मेहरानगढ़ दुर्ग की कुण्डली में अतिगंड योग था तथा गोचर कुण्डली में शूल योग था अतः शास्त्रार्थ सामूहिक अनिष्ट घटित हुआ।

सामूहिक अनिष्ट के लिए आवश्यक उन सात बिन्दुओं की प्रमाणिकता के लिए दुर्ग से जुड़ा एक अन्य उदाहरण लेते हैं। यहॉ दुर्ग में घटित एक अन्य सामूहिक अनिष्ट का उदाहरण उद्धृत हैं। यहॉ पर भी अष्टमेश लग्नेश को देख रहा है तथा लग्न पाप पिड़ित हैं। अष्टमेश व मारकेश की महादशा में मोक्ष (द्वादशेश) का अन्तर चल रहा हैं। जिस प्रकार सितम्बर 2008 के अनिष्ट में चन्द्रमा में शुक्र की अन्तर दशा व चन्द्रमा का प्रत्यंतर चल रहा था अतः उपरोक्त उद्धृत उदाहरणों व ऋचाओं से यही ज्ञात होता है कि सामूहिक अनिष्ट में मुख्य रूप से उन सात बिन्दुओ में से किन्ही दो का होना आवश्यक हैं तभी सामूहिक अनिष्ट सम्भव होता हैं। दुर्ग मे घटित घटना की प्रमाणिकता के लिए
दो अन्य सामूहिक अनिष्ट के उदाहरण यहा प्रस्तुत किये जा रहे हैं जो कि ज्वलंत उदाहरण हैं।

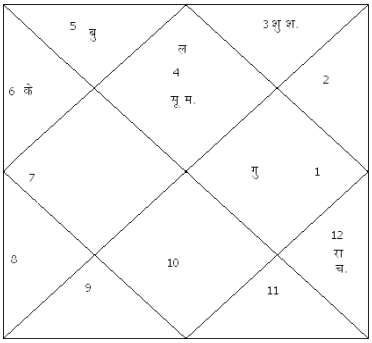

(मेहरानगढ दुर्ग की गोचर कुण्डली 09 अगस्त 1857, 09:15)

मुम्बई में नवम्बर 2008 की घटना व कच्छ भुज्ज में घटित (2001, गुजरात) भुकम्प की घटना, यह दोनो घटनाऍ प्रबल सामूहिक अनिष्ट का ज्वलंत उदाहरण हैं।
इस गोचर कुण्डली में भी दुर्ग की सूर्य व गोचर कुण्डली की तरह अष्टमेश व लग्नेश का दृष्टि सम्बन्ध हैं। अर्थात् अष्टमेश लग्नेश को देख रहा हैं ओर यह प्रमाणित कर रहा हैं कि अनिष्ट का होना सम्भव था।

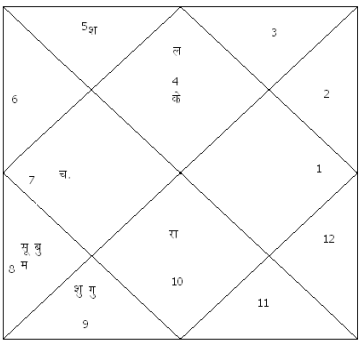

(मुम्बई अनिष्ट की गोचर कुण्डली 26 नवम्बर 2008, 09:30)

www.drjitendraastro.com

एक अन्य उदाहरण गुजरात भुकम्प का हैं जो कि 2001 मे घटित हुआ यहा पर भी लग्न व चलित कुण्डली में अष्टमेश लग्न मे विराजित हैं तथा अमावस्या के दुसरे दिन यह भूकम्प आया जब कुम्भ लग्न था तथा अष्टमेश बुध लग्नस्थ था अतः सभी सामूहिक अनिष्टों के उदाहरणों में एक ही तरह के समीकरण व तथ्य सामने निकल कर आ रहे हैं अतः यह अनिष्ट ना किसी तांत्रिक अनुष्ठान और ना ही किसी मानविय भूल के कारण हैं। यह शास्त्रार्थ हैं।

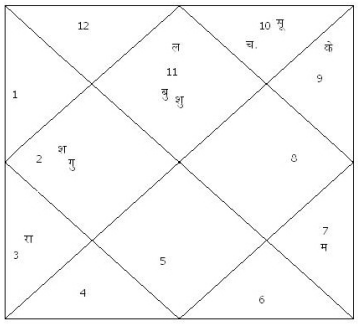

(गुजरात भुकम्प की गोचर कुण्डली 26 जनवरी 2001)

''अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां च व्यति क्रमात्''
त्रिणि तत्र प्रर्वतन्ते, दुर्भिक्षणं मरणं ध्रुवम्''

अर्थात् जहॉ पर पूजनीय लोगो का अनादर हो ओर जहॉ पर अपूजनीय लोगो को आदर दिया जाता हो ऐसे गणराज्य व महाराज्य में क्रमशः आगजनी, सामूहिक अनिष्ट, युद्ध, गृहयुद्ध व भय की आशंका बनी रहती हैं। इसमे कोई संदेह नही हैं अतः किसी भी सामूहिक अनिष्ट के लिए ग्रह गोचरीय व्यवस्था तो जिम्मेदार है ही परन्तु साथ ही मानव जाति का पवित्र संस्कार, निर्मल स्वच्छ हृदय और उनका एक दुसरे के साथ सहज व्यवहार भी अपेक्षित है।

शास्त्रार्थ कहा गया है उस समय (वैदिक काल) मानव जाति के शुद्ध आचरण से ग्रह अनुकुल चलते थें। परन्तु आज सैकड़ो हजारो लोग सांघतिक मृत्यु या सामूहिक अनिष्ट में मर जाते हैं ओर कुछ मुट्ठी भर बच जाते है इसका मुख्य कारण उनका पवित्र संस्कार व शुद्ध आचरण ही हैं। उपरोक्त समीकरण के अलावा ग्रहणादि भी सामूहिक अनिष्ट के लिए जिम्मेदार प्रकरण हैं। दुर्ग मे घटित घटना से एक माह पूर्व 15 दिनो में क्रमशः सुर्य व चन्द्र ग्रहण घटे थे। दोनो ही ग्रहण खण्डग्रास ग्रहण थें। जिनका प्रभाव तीन माह तक रहता हैं। **मेघमहोदधि मे कहा गया है –**

''क्रूर संयुक्त सूर्येन्द्वोः ग्रहणे नृपतिक्षयः।
राष्ट्र भंग इति प्राहुः भप्राज्ञा वै मुनीश्वराः।।''

अर्थात् क्रूर ग्रह मुख्य सूर्य चन्द्रमा को ग्रहण राजाओ का क्षय, उनके मान का क्षय तथा राज्य को भी भंग करता हैं। मुनीजनो ने यह भी कहा है कि एक ही माह में सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण हो तो राजा व प्रजा के बीच परस्पर महाक्रोध उत्पन्न होकर युद्ध की स्थिति होगी। राज्यमंत्रियो का विरोध होगा जैसा की प्रदृष्ट है भारत वर्ष के राजा अर्थात् सरकार के मंत्रियों का विरोध भी 26 नवम्बर के पश्चात् हुआ उनकी मानहानि हुई, पद का क्षय हुआ इसलिए शास्त्रार्थ वचन सही हैं।
चन्द्र ग्रहण की प्रदृष्ट पृष्ठभूमि देखने पर यह ज्ञात हुआ कि ग्रहण कुंभ राशि में घटित हुआ अतः जब भी कुम्भ राशि में ग्रहण हो तो देश के पश्चिम प्रदेश (राजस्थान) के पर्वतवासी पिड़ित होंगे तथा वहॉ के तस्कर और प्रजा (जोधपुर) दुःखी होगी। जो शास्त्रार्थ सिद्ध हैं।

''कुम्भोमरागे पीड्यन्ते गिरिजाः पिश्चिभाजनाः।
तस्कराद्विरदामीराः प्रजानां दुःख दायकाः।।''

(वर्ष प्रबोध राशि ग्रहण 77)

अतः सभी समीकरण एक ही धटना को इंगित कर रहे है कि सामूहिक अनिष्ट को घातचक्र, ग्रहण, वस्तुनिष्ट कुण्डली व गोचर कुण्डली का समानान्तर फलित निकाल कर ज्ञात किया जा सकता हैं।

www.drjitendraastro.com